...बच्चे अतीन्द्रिय सुखमय जीवन में आय फिर कहते हैं कि ये बाबा आया हुआ है। बेहद का बाबा आया हुआ है। किसलिए आए हुए हैं? इस पतित दुनियाँ को बदल और पावन दुनियाँ बनाने। पावन दुनियाँ कितनी बड़ी होगी? पतित दुनियाँ कितनी बड़ी होगी? ये अभी तुम्हारी बुद्धि में विचार आते होंगे, आना चाहिए। तो देखो, ये जो दुनिया है..... इसको पतित दुनियाँ कहते हैं। ऐसे नहीं कि नहीं कहते हैं। भ्रष्टाचारी दुनियाँ कहते हैं। तुम मीठे–2 बच्चों के दिल में ये आना चाहिए कि हमारी दुनियाँ देखो कितनी छोटी होगी, कितने हमारे महल, हम कितना राज्य करेंगे। राज्य तो होता है ना। अभी देखो वो जो हैं कौरव और तुम हो गये हो पाण्डव। देखो, फर्क हो गया ना। कौरव अपने राज्य में, जिनको वास्तव में काँग्रेसी कहा जाता है, कितना खुशियाँ... कभी–2 कितना गीत गाते हैं– हमारे भारत जैसा कोई देश हो नहीं सकता है। इनको ये तो बुद्धि में खयाल नहीं है कि हमारा भारत जो सतयुग में था, स्वर्ग था उस जैसा कोई भी नहीं हो सकता है। ऐसे तो नहीं समझ में आता है ना। तुमको ये समझ में आता ..है ये भारत कोई काम का नहीं है। ये भारत हमारा देश था। अभी नहीं है। अभी था– ये इन बिचारों को मालूम नहीं आता है, याद नहीं आता है। ये फिर भी हमारा भारत सबसे ऊँचा। अभी सबसे ऊँचा तो है, सबसे बड़ा तो है, सबसे प्राचीन तो है और जब था तब भारत क्या था। अभी तो तुम्हारी बुद्धि में आता है ना कि ये कौन–सा बाबा आया हुआ है। दुनियाँ में तो किसको मालूम नहीं है ना। तुम बच्चों को भी नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार इतनी खुशी, इतना रिगार्ड कि बेहद का बाबा आया हुआ है। बाबा कल्प–2 आते हैं ना। देखो, बहनें और भाई आपस में वो बैठ करके बातें करते हैं ना। तो बेहद का बाप आया हुआ है। फिर से आ करके हमको अपना राज व भाग, जो रावण ने हमारे से छीन लिया है ड्रामा प्लैनअनुसार। ऐसे नहीं है कि कोई रावण से हमारी लड़ाई लगी है और रावण ने आ करके राज्य छीना है। रावण के राज्य में हमारी जो मत है, बुद्धि है, वो भ्रष्ट हो जाती है। श्रेष्ठाचारी से हम भ्रष्टाचारी...। तो देखो, भ्रष्टाचारियों की दुनियाँ कितनी बढ़ गयी है। पहले–2 झाड़ के नीचे ये देखो, तो बस, एक हमारा ही देश है, और तो कोई नहीं। तो फर्क देखो, कितना हमारा देश छोटा! ...और उसमें तुम कितना सुखी रहेंगे। समझने की बात है ना। अरे, हीरे के महल होंगे, जवाहरों के महल होंगे, बड़े सुखी होंगे; क्योंकि ये रावण का राज्य होता ही नहीं है। तो तुम बच्चों की बुद्धि में खुशी होनी चाहिए ना। ये जो बच्चे और बच्चियों से अतीन्द्रिय सुख पूछो, ये तो तुम्हारी बुद्धि में स्थायी होना चाहिए ना। बाबा जो आये हैं तो वो स्वर्ग को ज़रूर स्थापन करेंगे। बाबा सिर्फ कहते हैं देहअभिमान छोड़ो, देहीअभिमानी बनो। ये एकदम बहुत महीन बात है। थोड़ी भी बात लटका देगी कोई चीज़ में। बाबा ने आगे कहा था ना, ये बाबा ने प्रोग्राम भेज दिया कि तुम 108 चकती का कपड़ा ; क्योंकि बड़े जवाहरी मिला, बड़ा नशा एकदम, बड़े राजाओं से व्यवहार वगैरह तो वो नशा तुम्हारा कैसे टूटे? टूटना तो चाहिए ना। और ये सभी जो कुछ भी है वो कैसे छूटे? तुम एकदम जैसे कि आत्मा हो। तुम्हारे सामने ये शरीर भी न भासे बैठे–2। शरीर भी भले है, वो भी समझते हैं ये तो पुराना है। अभी तो इनको छोड़ करके नया फर्स्टक्लास लेना है जैसे सर्प के मिसल। गाया जाता है ना। वो तो सर्प के मिसल हुआ। बाबा ने सतयुग की बातें सुनाई। ये तो है पुरानी खल। वो कोई पुरानी खल नहीं होती है। वो एक खल अच्छी छोड़ करके फिर दूसरी। वो जो दूसरी खल मिलती है, ये भी तुम बच्चों को ज्ञान है कि दूसरा फिर जो शरीर मिलेगा, कुछ प्वाइंट कम। देखो, प्वाइंट्स कितनी पतली होती हैं। तो तुम बच्चों को ये सभी जो ज्ञान मिलता है ना, ये बुद्धि में टपकना चाहिए, मंथन होना चाहिए कि हम तो अभी...। ये बहुत छी–2 दुनियाँ है। भले हमारे माँ हैं, बाप हैं, फलाना है। ये सभी जो भी हैं, सब छी–2 दुनियाँ है। इनको जैसे कि बुद्धि से देखते हुए भी गायब करना पड़ता है। देखते हुए, चलते,फिरते,उठते,बैठते जैसे कि हम यहाँ हैं ही नहीं। हम तो रास्ते पर हैं, जा रहे हैं, यात्रा पर जा रहे हैं। कौन जा रहे हैं? क्या शरीर लेकर जा रहे हैं? नहीं–2, बस हमारी

बुद्धि का योग जा रहा है घर के तरफ। तो अभ्यास तो करना पड़े ना। शरीर के होते अभ्यास करना पड़ता है। शरीर छोड़ने से कोई अभ्यास नहीं हो सकता है। अभ्यास होता ही है शरीर के होते। तो ये विचार करना होता है ना। शरीर तो बेशक पुराना है, दुनियाँ भी पुराना है.....पुराना है। इसके होते भी साक्षात्कार कर लिया कि बरोबर अभी हम(को) शरीर और जो शरीर के सब संबंधी हैं, इन सबको छोड़ करके घर जाना है। तो ऐसे समझने से अंदर में ये खुशी होती है ना कि ये सब कुछ छोड़ करके जो कुछ भी यहाँ है, वो सभी कुछ काम की चीज़ नहीं है। अभी हम वापस जाते हैं। नाटक पूरा हुआ है। तो शरीर होते ये पुरुषार्थ करना पड़ता है, बुद्धि का योग लगाना पड़ता है। देखो है ना बरोबर, मेहनत करनी पड़ती है ना। तो एक/दो को जब भी मिलते हैं मुझे, मन्मनाभव। देखो, मंत्र है बड़ा भारी। बड़ा जबरदस्त मंत्र है। ये मंत्र का कोई भी, समझ में किसको नहीं आता। भले गीता वाले पढ़ते हैं। बाबा ने बहुत ही गीता पढ़ी है– मन्मनाभव। अरे, जैसे कोई उल्लू पढ़ते हैं। कोई खुशी नहीं, कोई अर्थ नहीं, कोई समझ नहीं। वैसे ही सभी पढ़ते होंगे। और क्या ! अर्थ तो कोई भी नहीं समझेगा ना। गीता तो बहुत ढेर हज़ारों पढ़ते हैं, लाखों पढ़ते हैं, करोड़ों पढ़ते हैं। वो विलायत के तरफ में भी गीता बहुत... परन्तु ये शास्त्र, जैसे और शास्त्र पढ़ते हैं ना, बाईबल वगैरह–2 पढ़ते हैं, तैसे ये तो उनकी बुद्धि में नहीं होगा कि अब हम तैयारी कर रहे हैं वहाँ के लिए, पढ़ रहे हैं वहाँ के लिए, सीख रहे हैं राजयोग। हम अभी बाकी थोड़ा रोज़ है। ...हमारे लिये तो कोई थोड़े बाकी घण्टे ; क्योंकि उसकी भेंट में कल्प की आयु बड़ी..। बाकी कितने होंगे? बाकी थोड़े ही समय है। तो ऐसा करते–2 अपन को बहलाते याद की यात्रा में, फिर खुशी में आना चाहिए। ... बुद्धि में (कि) हम जो अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, ये सब खलास हो (जायेगा)। ये सब जो मिरूआ हैं ना। ऐसे कहते हैं ना– मिरूआ मौत मलूका शिकार। तो हम मलूक ... हैं ना। तो देखो, हम अभी, जो माशूक है, उनको बहुत अच्छी तरह से जान गए हैं। माशूक आ करके हमारे से बात करते हैं, शिक्षा देते हैं, खाते हैं, पीते हैं, खेलते हैं। है बड़ा साधारण रूप में। है बहुत ऊँचे ते ऊँचा। यूँ तो आत्माएँ एक/दो में बुलाई जाती हैं। वो कोई बड़ी बातें नहीं हैं एकदम ; परन्तु ये तो देखो, अभी बाबा आया हुआ है, हमको फिर से वर्सा देने। कल्प–2 बाबा ऐसे आते हैं वर्सा देने। ...इतनी सारी दुनियाँ कितनी छी–2 है! तो ऐसे–2 अपने से बात करनी होती है। इसको कहा जाता है विचार–सागर–मंथन। हर एक बच्चे के लिए, कोई सिर्फ ऐसे नहीं है। वो सागर मंथन तो एक वण्डरफुल बात है एकदम। कहाँ मनुष्य को विचार–सागर–मंथन करना है, कहाँ उन्होंने दिखलाया है ये लकड़ी, कछउ, सर्प और फलाना। तो है सब तुम बच्चों के लिए। तुम बच्चों को ये ज्ञान जो तुमको रोज़ सुबह को मिलता है। उनको सुबह को धन मिलता है ना। वो तो शास्त्र मिलता है ना। वो तो बहुत ही पढ़े, जन्म–जन्मांतर पढ़े। ...अभी तुम बच्चों को ये मालूम पड़ा कि हम भारतवासियों ने जितने ये वेद, शास्त्र, ग्रंथ, उपनिषद, यज्ञ, तप, दान, पुण्य किया होगा, इतना और कोई ने नहीं किया होगा; क्योंकि जिसने बहुत भक्ति की है शुरुआत से ले करके वही यहाँ आयेंगे। उसमें फिर ..जो बहुत शुरू में आये हैं, उसने बहुत भक्ति की होगी। जिसने बहुत भक्ति की होगी शुरुआत से ले करके वो यहाँ अपना शो करेंगे, जास्ती ज्ञान उठायेंगे, बहुत तीखे जायेंगे। याद में भी तीखे जायेंगे, कोई को समझाने में भी तीखे जायेंगे; क्योंकि उनको पहले नंबर में जाना है। जो पहले नंबर में आये हैं सो... पहले नंबर में जायेंगे, सूर्यवंशी घराने में पुरुषार्थ करते(करके) जायेंगे। तो देखते हो कि कोई अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, कोई पुरुषार्थहीन भी होते हैं, कोई.. बस ये सुना और ये गया धंधे–धोरी में, सब भूल गया। तो तुम वास्तव में, जिन्होंने छोड़ा है और अभी सर्विस में लगे हुए हो, उनको तो और ही अच्छा है। वो तो जैसे कि सच–2 भट्ठी में बैठे हुए हैं; क्योंकि वो जो सम्बंध है वो तो छूटा हुआ, टूटा हुआ है। तो भी देखने में ऐसे आता है, जो गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए और आ करके सुनते हैं, औरों को सुनाते हैं, नंबरवार हैं, सभी तो ऐसे नहीं, वो पुराने से तीखे जाते हैं। ऐसे देखने में आता है। बहुत नये–2 हैं, बहुत तीखे जाते हैं। देखो, ये अमृतसर वाले सब पीछे निकले

हैं या वहाँ से जो अच्छे–2, तुम ख्याल करेंगे, लिस्ट निकालेंगे, जो पुराने हैं। बिचारे नये बच्चे तो लिस्ट निकाल नहीं सकेंगे; क्योंकि तुम तो पहले–2 मालाएँ भी बनाते थे कि कौन...माला में आयेंगे– रुद्रमाला में या विजयमाला में? और फिर तुमने देखा कि अरे ये क्या, हम जिनको 3,4,5 नंबर में रखते हैं वो भागन्ति में हो गये हैं, माला से ही निकल गये एकदम, जाकर प्रजा में पड़े। ये हुआ है ना। तो बच्चों को ये दिन में ही...। तुम्हारी स्टूडेण्ट लाइफ भी है ना। दोनों लाइफ है– स्टूडेण्ट लाइफ भी है, गृहस्थ–व्यवहार में रह करके कोर्स पढ़ते हैं। ऐसे बहुत बच्चे हैं, गृहस्थ व्यवहार में रह करके डबल कोर्स उठाते हैं कि हम अभी जो फलाना है, फिर उनसे हम पास करके कोर्स... तो हमारे को लिफ्ट मिलेगी। बहुत डबल कोर्स भी उठाते हैं। तुम्हारा कोई दूसरा पढ़ाई का तो कोर्स है नहीं। तुम्हारा है कोर्स ये, बच्चियाँ बाल–बच्चे सम्भाले। कोई तो हैं जो पढ़ाई पढ़ते हैं। तो जो कुमारियाँ या कुमार वो पढ़ाई पढ़ते हैं। ये भी पढ़ाई पढ़ते हैं। उनको व्यवहार का और गृहस्थ का झंझट तो है नहीं। वो तीखे होने चाहिए। उसमें भी बाबा (ने) समझाया है कि कन्याएँ बहुत तीखी होनी चाहिए। कन्हैया नाम ही इसलिए पड़ा हुआ है कि कन्याएँ बहुत थीं। हो जाएँगी। कन्हैया और गौपाल। तो कन्हैया और गौपाल माताओं का नाम जास्ती पड़ा है... क्योंकि प्रवृत्तिमार्ग है। वो निवृत्तिमार्ग है। बड़ा क्लीयर है एकदम। निवृत्तिमार्ग को तुम समझा सकते हो। आने से ही झट समझा सकते हो– भई ये धर्म अलग है, ये प्रवृत्तिमार्ग का धर्म अलग है। ये सन्यास धर्म, सतयुग में श्री लक्ष्मी–नारायण कोई इस धर्म के थोड़े ही थे। वो तो प्रवृत्ति मार्ग के थे। वो राज्य करते थे। तुम बच्चे अभी समझ गये हो ना। देखो, तुम्हारी बुद्धि में सारा दिन ज्ञान टपकना चाहिए– देखो, हम कैसा बनते हैं! देवता(एँ) कैसे फर्स्टक्लास हैं! कैसे हर्षितमुख रहते हैं! क्यों नहीं भला एग्ज़ीबिशन में ये चित्र भी बनावें। इनके तो हैं ही। इनका तो गारंटी है– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म। अच्छा, फिर जो पापआत्मा जाते हैं, वो जाकर अपने लिए– मैं निर्गुण हारे में को गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। तो इनके सामने जाकर कहते हैं। हम मूर्ख हैं, पापी हैं, कपटी हैं। तो क्या करना चाहिए? उनको सूरत मनुष्य की हो और शिकल उनको बंदर की दे देना चाहिए, जैसे नारद को दिया था। तो वो भी एक कार्टून बना करके और उनके सामने बैठ करके पूजा करते हैं। तो वो समझ जावें देखो उनकी सूरत मनुष्य जैसी है, सीरत देवताओं जैसी है। देखो, ये भी मनुष्य हैं। इनकी सूरत है मनुष्य की। अपनी सीरत देखो कैसी वर्णन करते हैं– हम पापी हैं, कपटी हैं, नीच हैं। हम निर्गुण हारे में को गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। अभी उनको बोलते हैं आपे ही तरस परोई। अभी देवताएँ तो नहीं, ये रामचंद्र तो नहीं आ करके तरस करेंगे। वास्तव में तरस अपने ऊपर ही करना पड़ता है। बाबा कहते हैं ना, बहुत आते हैं– बाबा, आशीर्वाद करो। बाबा कहते हैं आशीर्वाद अपने ऊपर करो। ये खुद ही तुम देवता थे, सो तुम खुद ही बंदर बन गये हो। अभी तुमको बाबा युक्ति बताते हैं, उन युक्ति पर चलो तो तुम अपने ऊपर आशीर्वाद करेंगे, बंदर बुद्धि से देवता बुद्धि बन जायेंगे। अब जो श्याम बने हो सो सुन्दर बन जायेंगे। अब पुरुषार्थ करना पड़ेगा। भक्तिमार्ग में जो आशीर्वाद–2 ये महात्मा की आशीर्वाद हुई। देखो, हमको कितना धन मिला! ये महात्मा की आशीर्वाद हुई। देखो, जीते–2 हम मरते थे और उसकी आशीर्वाद हुई, कृपा हुई, हाथ घुमाया। बहुत आते हैं ना– हमारे सर पर हाथ घुमाओ। बीमार पड़ते हैं ना, पीछे वो महात्मा आयेगा, वो हाथ घुमायेंगे। उनका हाथ पकड़ करके भी, अरे ये हाथ को घुमाओ तो। अभी हाथ घुमाने की तो यहाँ कोई बात ही नहीं है। पढ़ाई में कोई हाथ घुमाने की बात थोड़े ही होती है। यहाँ तो बाबा कहते हैं कि बच्चे थोड़ी बिल्कुल.. और है महामंत्र। मन्मनाभव का अर्थ है ना। अच्छा, वो मंत्र बहुत देते हैं– श्रीकृष्ण...राम–2, शिव–2 फलाना....। अनेक प्रकार के मंत्र देते हैं। कभी कान.... फिर घण्टी बजेगी मंदिरों की। ये करेंगे, ये करेंगे। अनेक देते हैं; क्योंकि ये अनुभवी है ना। इसने तो बहुत ही गुरू किया। तो हर एक गुरू की भिन्न–2 मंत्र और शिक्षा वगैरह। अरे, बहुत हैं! उल्टा लटकाना, ये करना। ये हठयोग के तो सैकड़े नमूने हैं। तो उनमें कितनी

मेहनत भी होती है। प्राणायाम, धरती में दब जाना, मुख से ये निकालना, नीचे से निकालना, नीचे से निकालना, मुख से निकालना। ये सब करते हैं ना। तुम लोगों (ने) सुना नहीं। अगर तुमको देखना है कितने हठयोग हैं तो जयपुर के म्यूज़ियम में जाओ। वहाँ रखा हुआ है हठयोग के सभी। औरों में भी होंगे कहाँ! और यहाँ देखो तुम कितना आराम से उठते, बैठते, चलते। बाबा कहते हैं ये स्मरण करते रहो बाबा हमको आ करके फिर से हमारी बादशाही देते हैं। हमारी बादशाही कितनी छोटी थी और सुख कितने थे और एक ही हमारा धर्म अद्वैत। अद्वैत माना देवता धर्म। द्वैत यानी दो आ गए, दूसरा आ गया। बस, दो हाथ से ताली बज लेती है। अभी एक है। क्या चाहिए बच्ची? .... तो ये जानते हैं उनको स्वर्ग कहा जाता है। वहाँ लड़ाई–झगड़ा, मारा–मारी कुछ होती ही नहीं है; परन्तु शास्त्रों में बकवाद लिख दी है। इसलिए घोर अंधियारा ; क्योंकि ज्ञान तो है नहीं। उसमें मिथ्या ज्ञान है। उसको कहा जाता है मिथ्या ज्ञान। हर बात में मिथ्या ज्ञान। देखो, कल्प की आयु, मिथ्या ज्ञान। सबसे पहले में पहले कहते हैं कि गीता, सबसे सर्वोत्तम गीता, बोलते हैं उसमें लिखा हुआ है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। भगवानुवाच– मैं सर्वव्यापी हूँ। देखो अभी बाप आकर कहते हैं मैंने तो कभी तुमको कहा ही नहीं है कि ये सर्वव्यापी है। ये तुमको गिराने के लिए भक्तिमार्ग। भक्तिमार्ग माना दुर्गति मार्ग तो उनमें होंगी भी ऐसी बातें ना। तो अभी तुम समझते हो ना कि बरोबर.... क्योंकि वो भक्तिमार्ग में चल रहे हैं। तुम्हारे लिये भक्तिमार्ग बंद हुआ। तुमको ज्ञान मिल रहा है। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल रहा है। उनको कोई तीसरा नेत्र तो है ही नहीं जो कुछ ज्ञान को समझें। वो भक्ति–2। वो कहते हैं एक दफा आयेंगे। कब आयेंगे? अरे, जब कलहयुग पूरा होगा तो भक्ति भी पूरी हो जायेगी। ये सतयुग में तो कोई भक्ति होती ही नहीं है बिल्कुल ही। अभी कलहयुग कब पूरा होगा वो तो बिचारों को मालूम नहीं; क्योंकि भक्ति की धुन ज़ोर से चली जा रही है। दिन–प्रतिदिन भक्ति बढ़ती ही जायेगी। सुनते भी हो बरोबर कुम्भ के मेले पर आगे 10 लाख आये थे, अभी 12 लाख। फिर दूसरा वर्ष होगा– अभी 15 लाख, अभी 25 लाख। क्यों? ...ये वृद्धि होती रहती है ना मनुष्यों की। मनुष्यों की वृद्धि होगी तो ज़रूर वृद्धि ही सब काम करेगी ना। तो देखो, सब बात में देखो, हर एक बात वृद्धि को पाती रहती है। अभी देखो, दुनियाँ ने कितनी वृद्धि पा ली है! कितने मनुष्य हैं! भारत की धरनी कोई बड़ी नहीं हुई है। दुनियाँ तो इतनी ही है। दुनियाँ इतनी ही बनी रहेगी जितनी अभी है; परन्तु मनुष्य कम होंगे ना। ये तो समझते हो कि एक धर्म होगा और देवी–देवता धर्म के मनुष्य होंगे। दुनियाँ तो सारी होगी ना, जो भी है अभी। दुनियाँ छोटी नहीं हो जायेगी। मनुष्य थोड़े हो जायेंगे और फिर तुम समझते हो कि तुम्हारा राज्य होगा। तो तुम बच्चों को अंदर में खुशी रखनी चाहिए ना– हम अपना योगबल से स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाबा की श्रीमत है कि बच्चे, मामेकम् याद करते रहो तो तुम्हारा पाप का घड़ा निकलता जावे, भस्म होता जावे। अभी समझ की तो बात है ना। खाद पड़ी है। इंगलिश में बड़ा अच्छा नाम रखते हैं– गोल्डन एज, सिल्वर एज, कॉपर एज, आयरन एज। अभी उसमें कुछ ऐसा नहीं लिखा हुआ है। उसमें सिर्फ कहते हैं– सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो। उनमें ये नहीं दिखलाते हैं कि खाद पड़ती है। नहीं तो इंगलिश अक्षर से सिद्ध होता है। भई गोल्डन एज, उसमें तो खाद नहीं पड़ी, वो तो प्योर सोना। पीछे उसमें चाँदी पड़ता है। अभी उनको...सिल्वर एज कहा जाता है। हम तो कह ही नहीं सकते हैं सिल्वर एज ; (क्यों)कि लैग्वेज़ में है नहीं। हम कहते हैं सतोप्रधान, सतो। सतो क्यों कहते हैं? क्या हुआ? आत्मा में क्या हुआ? तो देखो, कुछ असर है नहीं। इंगलिश अक्षर बड़े अच्छे काम में आते हैं कि हाँ बरोबर उनमें चाँदी, सिल्वर एज़। अच्छा, उसमें लिख दिया है– चंद्रवंशी। ऐसे नहीं लिखा है कि कोई चाँदी वंशी। कुछ भी नहीं। तो इंगलिश अक्षर कितने काम में आते हैं। इंगलिश अक्षर न हो तो तुम पूरा समझा न सको अच्छी तरह से। भई गोल्डन एज, फिर सिल्वर एज, फिर कॉपर एज, फिर आयरन एज। बरोबर ..इसमें ये सभी खाद पड़ती है। बाप भी समझाते हैं कि बच्चे, अब ये खाद निकले कैसे? हिन्दी में तो अक्षर, शास्त्रों में ऐसे कोई अक्षर है नहीं।

सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो। अच्छा, तमो से हम सतो कैसे हों? ये तो कोई कह नहीं सकते हैं। वो समझते हैं कि तमोप्रधान से हम गंगा में स्नान करेंगे तो सतो बनेंगे। ये तो हो ही नहीं सकता है। स्नान करने से कोई उल्टा थोड़े ही सतोप्रधान में चले जायेंगे। ये तो हो नहीं सकता है। इसमें कुछ भी सफाई नहीं है कोई बात की। स्नान तो हम रोज़ ही करते हैं। ...पानी में करते हैं। ऐसे बहुत मनुष्य हैं, रोज़ गंगा में स्नान करते हैं, नदियों में स्नान करते हैं। घर में नहीं। जो गाँवड़े होते हैं ना, वो जो नहर बहती है कहाँ, सुबह को जा करके नहर में जाकर स्नान करके आते हैं। कहाँ भी जाओ कोई स्नान करने, नहरों पर, गंगा जी पर जाओ, वहाँ जाओ। तो बहुत रोज़ नेमी हो जाते हैं। अभी तुम बच्चों को कोई उसमें तो नेमी नहीं होना होता है ना। वो तो मनुष्य करते हैं। तुमको नेमी कैसे होना होता है? बहुत नेम रखते हैं, बहुत नहीं रखते हैं। तुम बच्चों का नेम फिर क्या है? ये नेम रखो। कुछ समय याद करो। याद का स्नान करो। समझा ना ; क्योंकि जब तुम याद की यात्रा करते हो तो तुमको ज्ञान तो मिलता है ना। तुम याद की यात्रा में कहाँ, तुमको सिखलाने वाले कहाँ हैं? तो जो सिखलाने वाले हैं वो साथ–2 में तुमको ज्ञान स्नान भी कराते हैं, योग की यात्रा भी सिखलाते हैं, दोनों। ऐसा हो नहीं सकता है। शास्त्रों का ज्ञान तो बहुत सिखलाते हैं। योग की यात्रा कभी कोई नहीं सिखलायेंगे। जो योग की यात्रा सिखलाते हैं– मन्मनाभव, मद्याजीभव, वो ज्ञान ज़रूर देते हैं। वो ज्ञान ज़रूर देंगे; क्योंकि उनमें योग का भी ज्ञान है तो वो सृष्टि के चक्कर का भी ज्ञान है। तो जो योग का ज्ञान देगा वो ज्ञान देगा। जो ज्ञान देगा, वो तो शास्त्रों का बहुत ही कुछ देते रहते हैं। वो योग तो कुछ जानते ही नहीं हैं। वो तो मंत्र दे देते हैं। ये मंत्र को वो तो कुछ समझ ही नहीं सकते हैं। वो योग समझ लेते हैं स्थूल योग– ये हठ करना, ये करना, ये करना। ये योग उसको कहा जाता है। योगाश्रम ढेर हैं, अनेकानेक हैं। कोई भी आश्रम में जाओ, वहाँ ऐसे थोड़े ही कहते हैं– मन्मनाभव। वो तो बैठ करके उल्टा–पुल्टा–सुल्टा ये सभी कुछ... नाक मूंदो, कान मूंदो ...ये करो, ये करो, बहुत गिट–2 करते हैं। तो जो ये मन्मनाभव का मंत्र देगा, उनमें सृष्टि के चक्र का ज्ञान ज़रूर होगा; क्योंकि ये जो याद की यात्रा, वो तो बाबा सिवाय कोई सिखला नहीं सकते हैं– मन्मनाभव, हे बच्चे! और ये भी कोई नहीं...सकते कि 84 का चक्र पूरा होता। ऐसे कोई भी मनुष्य, किसके पास जाओ, कभी भी कोई नहीं कहेंगे कि 84 का चक्कर पूरा होता है। इसलिए ये पुरानी दुनियाँ खतम होगी, नयी दुनियाँ ज़रूर होगी। यह दुनियाँ पुरानी हुई ना। झाड़ भी पुराना हो गया, जड़जड़ीभूत अवस्था में आ गया। झाड़ भी सड़ना है, खतम होना है एकदम; क्योंकि वो कोई उस झाड़ के माफिक तो नहीं है ना। ये तो मनुष्यों का झाड़ है ना। जो तुम्हारी बुद्धि में है बरोबर कि इस झाड़ की वृद्धि कैसे होती है। हम यहाँ बरोबर, बादशाही स्थापन हो रही है। बहुत ही सीखेंगे, ढेर। सब थोड़े ही इकट्ठा आयेंगे वहाँ नयी दुनियाँ में। यहाँ का हमारा ब्राह्मणों का झाड़ तो बड़ा होगा ना। बहुत बड़ा होगा, पीछे थोड़ा–2 हो करके आयेगा। होंगे बहुत; परन्तु गुप्त। बस, कोई ने थोड़ा भी सुन लिया तो भी प्रजा में आ जायेंगे। बाकी तुम बच्चों को पुरुषार्थ ऊँचा करना होता है ना। ये भी समझते हो कि ये सेन्टर बहुत वृद्धि को पायेंगे। तुम देखते तो हो ना कि प्रजा में कितना, अभी वहाँ कितना आते होंगे। अच्छा, अब एक दफा, दो दफा, कितना दफा बॉम्बे में ये प्रदर्शनी होगी। अभी तो जितना वर्ष है, जीती है, ... होती ही रहेगी, वृद्धि को पाती रहेगी, ढेर होती जायेगी। जैसे मंदिर जास्ती निकलते जाते हैं ना। कदम–2 पर मंदिर, कदम–2 पर टिकाना। तो इसलिए तुम्हारे हर एक जो सेन्टर छोटा होगा, बड़ा होगा, उनके ऊपर प्रदर्शनी रखी जायेगी समझाने के लिए। ये चित्र तो बहुत ही रखे जाते हैं। कोई–2 मंदिर वाले होते हैं ना, उनके पास चित्र बहुत रखते हैं। खास करके पूजा के अन्दर में तो चित्र बहुत रख देते हैं। तुमको तो अभी घर–2 में प्रदर्शनी रखनी होगी। माँ आई, भाई आये, बहन आई, उनको समझाते रहेंगे। तो देखो, कितना वृद्धि को पा जायेंगे। आखरीन में इच्छा पूरी करनी पड़ेगी। अभी नहीं करते हैं, आखरीन में हमें इन प्रदर्शनियों की इच्छा भी करनी ही पड़ेगी; क्योंकि ढेर जायेंगे। देखो तो सही,

भारत कितना बड़ा है! यह मद्रास के तरफ में देखो, बहुत बड़ा है, तुम क्या एक जगह में बैठे हो, क्या देखें दस/पाँच। यहाँ तो वो लाखों, लाखों भी क्यों कहें, ये करोड़ों होंगे। ये गामरे छोटे–2 गिनती करो। तो उन सबके पास ये पैगाम तो जाना ही है। तो देखो, अभी तुम बच्चों को कितनी सर्विस करनी है। भारी सर्विस करनी है। ये तो थोड़ी ही। अब ये फैशन अभी निकला है प्रदर्शनी और ये प्रोजेक्टर; परन्तु नहीं, गाँव–2 में तुमको ये सब कुछ बैठ करके दिखलाना पड़ेगा; क्योंकि गाँव वाले बहुत उठायेंगे। समझा ना। गरीब जो होंगे। एक गरीब होंगे, दूसरा जो भगत होंगे; क्योंकि जो भगत होते हैं वही तो देवताएँ थे ना। जो देवताओं की भक्ति करते रहे। वही तो पूज्य से पुजारी बने हैं ना। हम समझते हैं कि जो भगत हैं सो पूज्य थे। अभी ये पुजारी बन गये हैं। तो बाबा ने भी कहा है कि जहाँ भगत हैं...। अभी भगत तो बहुत जगह में ढेर हैं। कई होते हैं जो नेचर को माँगते(मानते) हैं, कई होते हैं जो क्या माँगते(मानते) हैं, कई होते हैं जो सन्यास कर लिया हुआ है। सो भी हैं तो भगत। तो ढेर को ज्ञान देने का है। ...तभी तो बाबा कहते हैं ये प्रदर्शनी के चित्र तो हमको बहुत छपाने होंगे। देखो, सभी माँगते रहते हैं– बाबा, प्रदर्शनी। और विवेक भी कहता है कि हर एक सेन्टर में ये प्रदर्शनी के अच्छे–2 चित्र ज़रूर बनाना पड़ेगा। ये बुद्धि रोज़ चलती रहती है। सीढ़ी ज़रूर चाहिए। अच्छा, शिव और शंकर का भेद का ज़रूर चाहिए। शिकल है ना उनमें दिखलाने में। देखो, वो लिंग है। उसके गले में माला पड़ती है, सूक्ष्मवतन में रहने वाले। वो दिखलाना पड़ता है ना उनको। अच्छा, भगवान जन्म–मरण रहित है। वो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। ये श्री नारायण–लक्ष्मी हैं, ये पुनर्जन्म में आते हैं। इनको 84 ज़रूर भोगना पड़े। अभी चित्र रखना पड़े शिव का, उनका। अभी बताओ, भगवान किसको कहा जाता है? जो पुनर्जन्म जन्म–मरण रहित है उनको ही कहा जाता है। ..... एक दफा तो जयन्ती गायी जाती है ना। जिसका भी मनुष्यों को कुछ पता नहीं है। शिवजयन्ती गायी जाती है। कैसे शिवजयन्ती, शिव कैसे आते हैं, देखो पता ही नहीं एकदम। भले पता नहीं क्या–2 शिवपुराण, फलाने रखे तो बहुत हैं और उनमें कुछ ऐसी कोई बात हो ही नहीं सकती है। यहाँ तो शिवबाबा के पिछाड़ी ब्रह्मा तो ज़रूर चाहिए। जो बाबा ने बहुत समझाया है देवताओं के लिए भी कि त्रिमूर्ति ब्रह्मा क्यों कहते हैं। त्रिमूर्ति भला, सबसे बड़ा तो शंकर है ना; क्योंकि बाबा ने समझाया है नेक्स्ट टू शिव, पीछे है शंकर; क्योंकि बाबा को तो आ करके सर्विस करनी पड़ती है उसी रूप से। उनको अपना शरीर नहीं। शंकर जिसका बहुत थोड़ा पार्ट है वो फिर भी चोला ले लेते हैं। इसलिए उसको भगवान नहीं कहा जाता है। बाबा ने समझाया था ना– नेक्स्ट टू है। प्लेस में जैसे कि वो है। इसलिए शिव–शंकर कह देते हैं। ये तो तुम बच्चे जानते हो, सो भी समझाने में जिस समय में सुनते हो उस समय में थोड़ा अच्छा लगता है, फिर भूल जाते हो, बहुत भूल जाते हो। जितनी जो अच्छी–2 प्वाइंट्स याद करेंगे, वो सर्विस अच्छी कर सकेंगे। नम्बरवार सर्विस करते रहते हैं। मुख्य–2 प्वाइंट्स, बाबा कहते हैं जो बिल्कुल अच्छी–2 प्वाइंटस हैं वो नोट करनी चाहिए। इसलिए बाबा कहते हैं प्वाइंट्स भी तो अच्छी है। प्वाइंट्स तो सभी रखते हैं। बैरिस्टर भी रखते हैं। डॉक्टर भी रखते हैं, कभी कोई दवा भूल न जाएं। डॉक्टर को कभी–2 दवाएँ भूल जाती हैं, फिर जाते हैं पेशेन्ट के ऊपर, अच्छा इनसे तो फायदा हुआ। ये फलानी दवा, इनसे अच्छा ये दवा इनको देवें। तो तुम्हारे पास भी तो बहुत दवाइयाँ रखते हैं। अच्छा, इस प्वाइंट से नहीं समझते हैं, फलानी प्वाइंट दूँ। फलानी प्वाइंट नहीं सुनते हैं, अच्छा फलानी प्वाइंट्स दूँ। बच्चों को प्वाइंट्स भी तो चाहिए ना। भले कोई–2 बच्चे हैं जो ऐसे सभी धारण कर देते हैं; परन्तु सभी प्वाइंट्स फिर किसको भी याद नहीं रहती हैं। भले देखो ये बाबा की तो बात ही अलग है। इनकी बात या तुम मम्मा की लो या तुम्हारे पास जो हैं। वो भी ऐसे ही जैसे भाषण करके आयेंगे ना, फिर उनको ज़रूर ये ख्याल होगा तो ये प्वाइंट हम ...। ये प्वाइंट भी हमारे पास उस समय में आती तो बहुत अच्छा था। समझा ना। ऐसे ज़रूर होगा। तुम भाषण करने वालियाँ ये ज़रूर समझती होंगी, जो समझदार हैं, जिनको देहअभिमान नहीं है। वो

भाषण करके पीछे आकर ख्याल करेंगी– मैंने प्वाइंट्स सब अच्छी तरह से समझायी ? ये प्वाइंट समझायी? ये प्वाइंट समझायी? तो उनको ये खयालात होते हैं– ये प्वाइंट हम भूल गये। इसलिए बाबा कहते हैं अब कोई साथ में नहीं चलनी है वो प्वाइंट। ऐसे नहीं है कि तुम्हारे कोई बाल–बच्चे वो प्वाइंट्स को पढ़ेंगे। जैसे ये शास्त्र पढ़ते हैं। ....समय की पढ़ाई लिए इस जीवन के लिए। बस, ये सभी खतम हो जायेंगे....। हम ये जानते हैं ना जो भी कुछ इस दुनियाँ में इन आँखों से देखते हैं। फिर सतयुग में हमको ये आँखें.... ये तो आँखें होंगी ; परन्तु जो दिव्य चक्षु मिली है, वो होगी नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम्हारा अभी मिलता है। बस, वो तीसरा नेत्र फिर बंद हो जायेगा। फिर ये आँखें तुम्हारी, वहाँ भी ये आँखें मिलेंगी जो मनुष्यों को, सबको हैं। अभी जो तुमको तीसरा नेत्र मिला हुआ है, त्रिनेत्री बने हो, त्रिकालदर्शी बने हो, वो फिर वहाँ नहीं होगा। यहाँ इस समय में तुमको बाबा आत्मा को ये ज्ञान समझा रहे हैं। आत्मा धारण कर रही है। तो आत्मा को तीसरा नेत्र किसका निकलता है? ज्ञान का मिलता है। जो बाबा में ज्ञान है। दूसरा ये तीसरा कोई नेत्र दे नहीं सकते हैं। ..... बाबा ही कहते हैं– ऐ आत्मा, सुनते हो ? अच्छी तरह से धारण करो। ...ये जो कुछ भी पढ़ते हैं, मनुष्य सीखते हैं... आत्मा ही सीखती है। कोई शरीर नहीं सीखते हैं। पर देहअभिमान होकर मैं सीखता हूँ, मैं बैरिस्टर बना हूँ, मैं करता हूँ। तो उनको ये ख्याल में नहीं आता मैं आत्मा इस शरीर द्वारा बैरिस्टर बना हूँ। ये कोई भी नहीं...। उसको कहा जाता है देहअभिमान। अभी इस समय में तुमको मैं आत्मा पढ़ती हूँ। बाबा, जो निराकार (है) हमको पढ़ाते हैं। ये याद रखना बड़ी मेहनत है। जितना ये याद रखेंगी तो बाबा को याद करने से ही अपनी आत्मा की याद रहेगी। अपनी आत्मा की याद रहेगी तब बाबा की याद रहेगी। तो बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है और खुशी में रहना चाहिए। अभी बाकी थोड़ा रोज़ में हमारा राज्य आया कि आया। ... ..देखो, क्या–2 है दुनियाँ में! कितना–2 घूमने जाते हैं! कैसे–2 बड़ी–2 चीज़ें हैं जिनकी महिमा करते हैं– यहाँ ये है, यहाँ ये है...है। वो सेवेन वण्डर ऑफ द वर्ल्ड दिखलाते हैं। भई ताजमहल है, फलाना है, ये है। ये होगा कुछ? हमारे राज्य में ये कुछ नहीं होगा। अभी तुम कहेंगे, हमारे राज्य में कुछ नहीं होगा। तो तुम्हारा राज्य और दूसरे कौरवों को राज्य। भारतवासियों का होवनहार राज्य और कौरवों का ये राज्य। तो देखो, तुम्हारा स्थापना हो रही है। उनका तुमको नॉलेज मिल रही है। उनको यही नॉलेज मिल रही है स्कूलों में। तो कितना फर्क रहता है! बहुत फर्क है। बच्चों को तो बाबा कहते हैं ये तो खुशी होनी चाहिए जो पढ़ाई पढ़ते हैं। हम पढ़ते ही हैं भविष्य में राज्य लेने के लिए। तो जो बच्चे पढ़ते हैं उनको तो मर्तबा याद रहता है ना बैरिस्टर बनेंगे, फिर यहाँ बैरिस्टरी करेंगे, ये करेंगे, ये करेंगे। तुम जानते हो कि हम पढ़ते हैं भविष्य के लिए। फिर हमको अच्छा पढ़ना चाहिए, जैसे मम्मा–बाबा पढ़ते हैं। तो हम राजगद्दी पर बैठ सकें। इतना हम अच्छी तरह से न पढ़ेंगे... वहाँ जो अनन्य पढ़ने वाली हैं। हैं तो सही ना नामी–ग्रामी। बाबा लिस्ट नहीं निकालते हैं। नहीं तो कभी–2 विचार होता है तो(कि) हम लिस्ट निकालेंगे तो सभी सेन्टर्स वाले (कहेंगे)– बाबा, इन लिस्ट में से हमको क्यों नहीं भेज देते हो? पीछे उन बिचारे की बदनामी हो जायेगी। अच्छी लिस्ट में उनका नाम न डालेंगे या नीचे में ले आयेंगे तो सभी सेन्टर वालों को मालूम पड़े कि ये माला बनायी है बाबा ने नंबरवार अच्छे–2 बच्चों का। तो झट बोलेंगे– बाबा, फलाने बच्ची का(को) तो हमको भेज दो, तो वो हमको रिफ्रेश करके जावे। ये मुश्किलात हो जायेगी। वो...फँक हो जाएंगी। जो नीचे वाली होगी ना, जिनका नाम नीचे में लिखेंगे, वो बिचारी फंक हो जायेगी। तो जब मनुष्य को फंक हो जाता है तो हार्ट फेल हो जाता है। हार्ट फेल यानी मर नहीं जाते हैं; पर उनको अफसोस हो जाता है कि हमारा नाम तो बहुतों के दिल पर चढ़ेगा नहीं। हम कहाँ भी जायेंगे, बोलेंगे– ये तो फलाने क्लास की है। इसलिए तुम्हारी माला नहीं बनाते हैं, न इतना वर्णन। कभी–2 समझाने के लिए कि देखो, तुम समझो। तो जो–2 भी भाषण वाली हैं उनको बुलाते हैं तो उनका रिगार्ड रखो। ये समझो। वो घर में, ऐसे नहीं समझो सेन्टर में रह करके हम बहुत होशियार हैं। नहीं, हमारे से बहुत

होशियार हैं। हमको होशियार होने का है। फिर होशियार आवे तो उनका रिगार्ड...। होशियार को मंगाना चाहिए कि फलानी, आ करके इनको रिफ्रेश करके जाओ। ऐसे नहीं समझना चाहिए मैं मँगाती हूँ तो वो क्या समझेगी। नहीं–2, ये तो कॉमन बात है। देखो, नंबरवार हैं ना। प्रेजीडेन्ट... है..... प्राइम मिनिस्टर फलाना। नंबरवार हैं ना। हर एक चीज़ नम्बरवार होती है। तो तुम्हारे पास भी नंबरवार हैं। वो कौन जानें? तो अभी बाबा कहते हैं– गुड़ जाने, शिवबाबा जाने और उनकी गोथरी, जिसमें उनका प्रवेश है। ये शिवबाबा की रहने की गोथरी है ना। तभी बाबा समझाते हैं, वो जाने और ये जाने। तो उनको भी ऐसे ही कहेंगे देखो, फलानी कितना भाषण करती है। जाओ अभी प्रदर्शनी में, जा करके जाँचते रहो तो(कि) कौन–2 अच्छी तरह से सिखलाती है, तुमको मालूम पड़ जायेगा। ये कैसे एकदम जैसे मशीन चलती है समझाने की। अच्छा, चलो बच्ची। इनको मालूम है कि अभी बुड्ढा है, हम अभी जा करके प्रिन्स बनेंगे, बहुत बड़े घर में जन्म लेंगे और तुम भी जैसे–2 जिसकी अवस्था है वो ऐसे बड़े घर में जा करके जन्म लेंगे। कोई राजा–रजवाड़ा पावरफुल में जायेंगे ; क्योंकि फिर तुमको राज्य मिलने का है। जब हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं तो भी मन्मनाभव है ; क्योंकि राज्य जब स्थापन होता है ; बाबा राज्य स्थापन कराते हैं तो बाबा याद आयेगा। तो कोई भी प्रकार से, कोई भी हालत में बाप को याद करना ज़रूर है। तो खुशी आयेगी।...सिर्फ योगबल से, कोई मुसीबत तो नहीं आती है। ये तो बाकी जो कर्मभोग है। वो तो अपना कर्मभोग है, वो तो भोगना ही पड़ेगा। उसमें उसके साथ इस ज्ञान का कोई कनेक्शन नहीं है। ये जो तुम(ने) किया हुआ है, भोगेगा। कर्मातीत अवस्था के लिए ज़रूर कुछ तो होना चाहिए जो गाया जाये कि अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। अभी भोगना है। सो पहले नम्बर में ये बाबा बताते रहते हैं।.....अभी तलक भी बहुत दूर है। ये हुआ, ये हुआ– ये कर्मबंधन पड़ा हुआ है ना। ये पाप का बोझ है ना। जैसा कर्म किया है ऐसा भोगना पड़ता है। तो भोगना है ना, कुछ न कुछ भोगना है तो सही ना। थोड़ी भी है तो बहुत भी है। माना कि अभी बहुत टाइम पड़ा हुआ है। हालत ऐसी है जमाने की। वो गाया जाता है बिगड़ी हुई है हालत जमाने की। तो ऐसे जमाने से जिसकी बिगड़ी हुई हालत है उनसे दिल नहीं लगाओ।

फिर बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

देखो, भूल न जाओ। रोज़–2 बाबा खुशी में ले आते हैं। अच्छा, ये भी याद करो हम पढ़ते हैं तो स्वर्ग में बादशाही के लिए पढ़ते हैं और जितना हम अच्छा पढ़ेंगे...। किस माफिक अच्छे में अच्छा? अरे, स्कूल में बैठे रहते हैं, पहले नंबर वाले अच्छे होते हैं। वहाँ तो देखते हैं और यहाँ भी देखते हैं बरोबर। समझते होंगे फलाने–2 सेन्टर से बड़े सेन्टर्स पर ज़रूर अच्छी–2 होंगी। छोटे सेन्टर पर ज़रूर कुछ कमती ताकत वाली होंगी। ये भी तो समझें ना किसे हम फॉलो करें? हम मम्मा–बाबा को...। फॉलो मदर एण्ड फादर। समझा ना। फॉलो तो उनको करना है ना। बाबा फॉलो कराने की युक्ति बताते हैं। उसमें युक्ति में मदर–फादर जास्ती फॉलो करते हैं लॉ मुज़ीब। बच्चों को भी ऐसे कहे फॉलो फॉदर। फॉलो मदर एण्ड फादर। तो मदर एण्ड फादर ही तो सरस्वती और ब्रह्मा और वही महाराजा–महारानी। ये तो तुम अच्छी तरह से समझ गये हो। अच्छा! अभी गुडमॉर्निंग।